भारतीय सामाजिक विज्ञान शोध परिषद (ICSSR)

द्वारा प्रायोजित त्रिदिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी

आयोजक: स्त्री अध्ययन विभाग, म.गां.अ.हिं.वि., वर्धा

29 - 31 मार्च 2016

"मध्य भारत में देशज संस्कृति, भाषा एवं जेंडर के प्रश्न "

('The Questions of Gender, Language and Indigenous Culture in Central India')

मध्य भारत में देशज संस्कृति ,भाषा एवं,जेंडर के प्रश्न हमेशा ही अकादमिक एवं आन्दोलन दोनों क्षेत्र के प्रमुख प्रश्न रहे हैं.अपने सहज ज्ञान से हम जिन्हें आदिवासी, जनजाति, आदिम जाति इत्यादि नामों से जानने की कोशिश करते रहे हैं, उस देशज समुदाय में पूरी दुनिया के पाँच फीसदी लोग आते हैं; लगभग 37 से 40 करोड़, पर ये दुनिया के कुल गरीबों का 15 फीसदी हैं। दुनिया के 90 देशों में लगभग पांच हज़ार अलग-अलग समुदायों से यह आते हैं और चार हज़ार तरह की भाषाएँ बोलते हैं। हमारे अपने देश में इनकी आबादी आठ फीसदी है। इनकी अलग संस्कृति, भाषाएँ और क्षेत्र हैं और खुद की एक अलग देशज पहचान भी। अपने अलग-अलग जीवन-रूपों के साथ ये दुनिया के सबसे विविध लोग हैं और जीवन जीने की ये विविधता दरअसल, दुनिया को देखने के इनके नजरियों की भी विविधता है। अपनी इस विविधता और बहुलता के चलते ये हमें 'एक सत्य' से 'बहुल सत्यों' की ओर ले जाते हैं। अभी तक इनकी सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक विश्व-मीमांसा के साथ अलगाव बनाए रखा गया है और सत्ता के विमर्शों में इस तरह के समाजों को "हम" बनाम "वे" की औपनिवेशिक तर्ज पर देखा जाता रहा जिसके चलते ही राष्ट्र-राज्यों ने इन्हें 'पिछड़े' के तौर पर देखा और इनके 'विकास' को एक साभ्यतिक कर्तव्य की तरह स्वीकार किया। देशज समुदायों की वैधानिक स्वीकार्यता का यह अर्थ नहीं था कि उनकी संस्कृति, क्षेत्र और संसाधनों के उनके हक़ को भी आदर एवं स्वायत्तता हासिल होगी।

देशज परम्परा या आदिवासी परम्परा के प्रति तथाकथित शहरी या सभ्य परम्परा का दृष्टिकोण बहुत खराब रहा है. आदिवासी लोग या परम्पराएं उनके लिए विकास से छूटे ऐसे पिछडे लोग रहे हैं, जिन्हें सभ्य बनाने की सख्त आवश्यकता है, जो सभ्यता के अभाव में अपनी राह से भटक गए है और हिंसक हो गए हैं. उन्हें सभ्य बनाने के लिए तमाम धार्मिक संगठनों से लेकर बहुराष्ट्रीय विदेशी कम्पनियों की लगातार नजर रही हैं. कहीं धर्म परिवर्तन, कहीं खानों में रोजगार और कहीं उनकी लोक कलाओं को मंच देने के नाम पर शोषण की एक बहुत बडी इमारत तैयार हो चुकी है. जंगलों के सरकारीकरण, यातायात की बढ़ती सुविधाएं आदि के कारण इस तबके के साथ गैर आदिवासी समाज का संपर्क तेजी से बढ़ा है और इस संपर्क से तमाम नए किस्म के सामाजिक सांस्कृतिक मूल्यों में भी बदलाव हुए हैं. दुनिया भर में जल, जंगल, ज़मीन का अधिग्रहण, विस्थापन, पलायन, हिंसा, असंतोष और पारिस्थितिकीय संकट देशज समुदायों की केन्द्रीय समस्या है।इसे 'विकास की हिंसा' के रूप में चित्रित किया जाता है। जमीन और प्राकृतिक संसाधनों पर अधिकार का विमर्श दरअसल देशज समुदायों के

मसलों को पर्यावरणीय और विकास के विमर्श के साथ जोड़ता है। यह महज संयोग नहीं है कि पूरी दुनिया के सर्वाधिक जैव-विविधता वाले स्थान (95 फीसदी) और प्राकृतिक संसाधन इन्हीं देशज इलाकों में ही क्यों बचे हैं और अब इन पर खतरा क्यों बढ़ा है? देशज समाजों का प्रकृति के साथ एक मजबूत रिश्ता रहा और यह देशज ज्ञान परंपरा का भी मूल आधार रहा है। देशज ज्ञान और सांस्कृतिक पूंजी में एक दीर्घजीविता का गुण हमेशा से ही विद्यमान रहा है और इसकी धुरी देशज महिलाएं रहीं है। देशज जीवन ढंग महिलाओं को कई तरह के विकल्प और जगहें मुहैया कराता है। सामाजिक और आर्थिक दोनों तरह के क्रियाकलापों में देशज समुदाय स्त्री और पुरुष, दोनों को एक हद तक समान उतरदायित्व और निर्णय का अधिकार देते हैं। मध्य भारत के आदिवासी बहुल इलाकों में आदिवासी महिलाएं उत्पादक और स्वतंत्र मानवीय अस्तित्व को अपनाती हैं। बावजूद इसके विकास और गैर-देशज समाजों की अंतरक्रिया और हस्तक्षेप से रूपांतरण की एक प्रत्यक्ष और परोक्ष कार्यवाही यहाँ घटित हो रही है, जिसका व्यापक असर देशज समाजों के अतीत से लेकर मौजूदा सामाजिक-सांस्कृतिक ताने-बाने पर पड़ रहा है। इस बदलाव ने पारिवारिक ढाँचे को भी बदला है. देशज समाज जो कि अपनी जेंडर संवेदनशीलता और महिलाओं के विरुद्ध हिंसा से मुक्त समाज माने जाते थे, आज महिलाओं को विरुद्ध हिंसा में उनकी सहभागिता में वृद्धि हुई है. श्रम के स्त्रोत के रूप में पुरुषों के साथ महिलाओं की भूमिका भी बड़ी है ,इसी कारण ट्रैफिकिंग जैसी समस्याएँ सामने आकर खडी हो गयीं हैं. लगातार घरेलू श्रम के नाम पर महिलाओं को देश विदेश में भेजा जा रहा है, जहां वे विभिन्न प्रकार के उत्पीड़न में फंसती जा रही हैं. आदिवासी समाजों में ईसाईकरण या हिन्दूकरण जैसे बदलावों ने भी महिलाओं के जीवन, उसकी स्वतंत्रता और समानता को प्रभावित किया है.

आर्थिक, सामाजिक बदलाव से आये इनके सामाजिक संबंधों में बदलाव, श्रम के स्त्रोत के रूप में इनकी खपत ,इनकी कलाओं का बाजारीकरण उसके बडे आर्थिक लाभों से फ़ायदा लेते बड़े व्यापारिक संगठन और इस सबके बदले आदिवासियों को मिलने वाले बहुत कम लाभ और ढेर सा शोषण अकादमिक एवं आन्दोलन दोनों ही क्षेत्र में एक चिंताजनक वातावरण बनाते हैं. यह सत्य है की इस शोषण के खिलाफ एक प्रतिरोधी चेतना भी हम पाते है. इसका स्वरूप हम तमाम बड़े आन्दोलनों के साथ साथ साहित्य में भी देख सकते हैं. सामाजिक ताने बाने में बदलाव, आर्थिक शोषण, जेंडर मुद्दे आदिवादी साहित्य में बहुत प्रखरता से आये हैं.

मध्य भारत में होने के नाते स्त्री अध्ययन विभाग म.गां.अ.हि.वि.,वर्धा ने सदैव आदिवासी समाज और उनकी महिलाओं की जीवन स्थितियों, सामाजिक आ रहे बदलावों का अध्ययन करने पर हमेशा स्वयं को केन्द्रित रखा है. इस सन्दर्भ में ही इस राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किए जाने की योजना बनायी गयी है.इस संगोष्ठी में हमारा प्रयास होगा कि हम देशज समाजों में आ रहे ,आर्थिक सामाजिक, सांस्कृतिक बदलावों, उनके शोषण और इससे उत्पन्न हुई जेंडर असमानता की वर्तमान स्थिति को समझ सकें. साथ ही उनकी प्रतिरोधी चेतना को भी देखें कि वे इन स्थितियों या अपने शोषण के विरुद्ध स्वयं को खडा कर रहे हैं.

आमंत्रण

महोदय/महोदया,

आपको सूचित करते हुए अत्यंत हर्ष हो रहा है कि महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के स्त्री अध्ययन विभाग एवं भारतीय सामाजिक विज्ञान शोध परिषद (ICSSR) के संयुक्त तत्वावधान द्वारा "मध्य भारत में देशज संस्कृति,भाषा एवं जेंडर के प्रश्न" विषय पर दिनांक 29-31 मार्च 2016 को राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया जा रहा है।

इस संगोष्ठी हेतु निम्न उप-विषय रखे जा रहे हैं-

1) भारतीय संदर्भ में राज्य, देशजता एवं जेंडर के प्रश्न
2) देशजता के विभिन्न परिप्रेक्ष्य
3) विकास की राजनीति देशज प्रतिरोध एवं जेंडर,
4) मध्य भारत की आदिवासी महिलाएं एवं वर्तमान चुनौतियां

सभी सम्मानित शिक्षाविदों,अकादमिक सदस्यों, शोधार्थियों एवं विद्यार्थियों से राष्ट्रीय संगोष्ठी के विषय – उप विषय पर शोध पत्र /आलेख आमंत्रित किए जाते है। शोध पत्र /आलेख का सार (abstract) अधिकतम 300 शब्दों में तथा पूर्ण पत्र /आलेख 2000 शब्दों में कृतिदेव अथवा मंगल फॉन्ट में होना चाहिए। इसकी सॉफ्टकॉपी avifem@gmail.com पर अनिवार्य रुप से भेजें। अपना पंजीयन कराने वाले प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र प्रदान किया जाएगा। प्रतिभागी अपना पंजीयन डाक द्वारा या ऑनलाइन करा सकते है। संगोष्ठी में भाग लेने वाले प्रतिभागी अपना शोध पत्र /आलेख सार 18 मार्च 2016 तक ई-मेल अथवा डाक द्वारा आवश्यक रुप से संगोष्ठी संयोजक को उपलब्ध कराने का कष्ट करें।

- **संगोष्ठी से संबंधित महत्वपूर्ण जानकारियाँ**

❖ प्रतिभागी हेतु पंजीयन कराने की अंतिम तिथि - 18 मार्च 2016

❖ पंजीयन शुल्क अकादमिक सदस्य/ शिक्षक -1000/-रु.

❖ पंजीयन शुल्क शोधार्थी/विद्यार्थी -500/-रु.

❖ शोध सारांश भेजने की अंतिम तिथि-18 मार्च 2016

❖ शोध सारांश स्वीकृत होने की सूचना-21 मार्च 2016

❖ पूर्ण शोध पत्र /आलेख भेजने की अंतिम तिथि-27 मार्च 2016

पंजीकरण फार्म

"मध्य भारत में देशज संस्कृति, भाषा एवं जेंडर के प्रश्न"

स्त्री अध्ययन विभाग एवं भारतीय सामाजिक विज्ञान शोध परिषद के
संयुक्त तत्वावधान में आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी

29 - 31 मार्च 2016

नाम :- .....

पद :- .....

संस्थान :- .....

पता :- .....

मोबाइल नं.:- .....

ई-मेल :- .....

शोध पत्र शीर्षक :- .....

पंजीयन शुल्क का विवरण :-.....

बैंक का नाम एवं दिनांक:- .....

डी. डी. नं. एवं राशि :- .....

ठहरने की व्यवस्था :- (आवश्यक है) /(नही है)

आगमन की तिथि व समय :- .....

प्रस्थान की तिथि व समय :- .....

स्थान :- .....

दिनांक :- ..... हस्ताक्षर

नोट :-

- आवेदनकर्ता avifem@gmail.com ई-मेल पर अपना पंजीयन फार्म एवं शोध पत्र/आलेख सारांश भेजे।
- जिन बाह्य शिक्षकों /शोधार्थी का शोध पत्र /आलेख चयनित होगा उन्हें नियमानुसार आने-जाने का किराया दिया जाएगा ।
- भोजन एवं आवास की व्यवस्था विश्वविद्यालय द्वारा की जाएगी। विश्वविद्यालय में आवास की सुविधा सीमित है। अतः आवास सुविधा प्राप्ति हेतु पहले सूचित करना आवश्यक है।

आयोजन समिति

मुख्य संरक्षक

प्रो. गिरीश्वर मिश्र

कुलपति, म.गां.अ.हि.वि, वर्धा

संगोष्ठी समन्वयक

डॉ. सुप्रिया पाठक

प्रभारी अध्यक्ष, स्त्री अध्ययन विभाग, म.गां.अ.हि.वि, वर्धा

मोब. नं. 9850200918,

supriya_rajj@gmail.com

संयोजक

डॉ. अवंतिका शुक्ला

असि.प्रोफेसर ,स्त्री अध्ययन विभाग, म.गां.अ.हि.वि, वर्धा

मोब. नं. 8600553082,

avifem@gmail.com

सह-संयोजक

श्री चरनजीत

असि.प्रोफेसर ,स्त्री अध्ययन विभाग, म.गां.अ.हि.वि, वर्धा

मोब. नं. 9491655201,

charanjeetws@gmail.com

सम्पर्क सूत्र

डॉ. अवंतिका शुक्ला,

सन्योजक राष्ट्रीय संगोष्ठी एवं असि.प्रोफेसर,

स्त्री अध्ययन विभाग

म.गां.अ.हि.वि, वर्धा

मोब.- 8600553082,

ई.मेल- avifem@gmail.com